



॥ सोमवार व्रत कथा (भगवान शिव
की पावन कथा) ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ सोमवार व्रत कथा (भगवान शिव की पावन कथा) ॥

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में एक अत्यंत धनवान साहूकार रहता था। उसके पास धन-धान्य, वैभव और सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी, परंतु उसे संतान का सुख प्राप्त नहीं था। इस कारण वह और उसकी पत्नी सदैव दुखी रहते थे।

साहूकार भगवान शिव का परम भक्त था। वह प्रत्येक सोमवार का व्रत करता, शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, धतूरा और भांग अर्पित करता तथा पूरे मन से भगवान शिव की आराधना करता।

भगवान शिव और माता पार्वती उसकी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न थे। एक दिन माता पार्वती ने भगवान शिव से कहा, "प्रभु! आपका यह भक्त अत्यंत श्रद्धा से आपकी पूजा करता है। कृपया इसे संतान का सुख प्रदान करें।"

भगवान शिव बोले, "देवि! इसके भाग्य में संतान का योग नहीं है, परंतु आपकी प्रार्थना से मैं इसे एक पुत्र का वरदान देता हूँ। किंतु उस पुत्र की आयु केवल बारह वर्ष होगी।"

भगवान शिव की यह बात साहूकार ने सुन ली, फिर भी उसने अपनी भक्ति और सोमवार का व्रत नहीं छोड़ा। कुछ समय बाद उसके घर एक सुंदर पुत्र का जन्म हुआ। पूरे परिवार में आनंद छा गया।

जब बालक ग्यारह वर्ष का हुआ तो साहूकार ने उसे अपने मामा के साथ काशी विद्या प्राप्त करने भेज दिया। जाते समय उसने मामा से कहा कि मार्ग में जहाँ भी यज्ञ, पूजा या ब्राह्मण मिलें, उन्हें यथाशक्ति दान-दक्षिणा अवश्य देना।

यात्रा के दौरान वे एक नगर पहुँचे, जहाँ राजा अपनी पुत्री का विवाह करा रहे थे। जिस राजकुमार से विवाह होना था,

वह एक आँख से काना था। राजा को चिंता हुई कि यदि राजकुमारी ने वर को देख लिया तो विवाह टूट जाएगा।

राजा के मंत्रियों ने साहूकार के सुंदर पुत्र को देखकर उससे कुछ समय के लिए दूल्हा बनने का अनुरोध किया। बालक के मामा ने सहमति दे दी। विवाह की सभी रस्में उसी बालक के साथ सम्पन्न हुईं। विदा के समय बालक ने राजकुमारी की चुनरी पर लिख दिया—

"तुम्हारा वास्तविक विवाह मेरे साथ हुआ है, किंतु मैं काशी पढ़ने जा रहा हूँ। जिससे तुम्हारा पुनः विवाह कराया जाएगा, वह वास्तविक वर नहीं है।"

जब यह बात राजकुमारी और उसके पिता को पता चली, तो उन्होंने विवाह रोक दिया और उस काने राजकुमार को वापस भेज दिया।

इधर बालक और उसका मामा काशी पहुँच गए। जब बालक की आयु बारह वर्ष पूर्ण हुई, उसी दिन उसने एक यज्ञ कराया। यज्ञ पूर्ण होने के बाद वह विश्राम करने लेटा और भगवान शिव के वरदान के अनुसार उसके प्राण निकल गए।

मामा अत्यंत विलाप करने लगे। उसी समय भगवान शिव और माता पार्वती वहाँ से गुजरे। माता पार्वती ने रोने का कारण पूछा। भगवान शिव ने सारी बात बताई। माता पार्वती ने करुणा से भरकर कहा, "प्रभु! इस भक्त ने जीवनभर आपका सोमवार व्रत किया है। कृपया इसके पुत्र को जीवनदान दें।"

भगवान शिव ने भक्त की अटूट श्रद्धा और माता पार्वती की प्रार्थना से प्रसन्न होकर उस बालक को पुनः जीवित कर दिया और उसे दीर्घायु का आशीर्वाद दिया।

विद्या पूरी करके बालक अपने मामा के साथ लौटने लगा। मार्ग में वही नगर पड़ा जहाँ उसका विवाह हुआ था। राजा ने उसे पहचान लिया और अपनी पुत्री का विधिपूर्वक उसी के साथ पुनः विवाह कराकर उन्हें बहुत-सा धन और सम्मान देकर विदा किया।

जब साहूकार ने अपने पुत्र को जीवित और सुरक्षित लौटते देखा तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने भगवान शिव का बार-बार धन्यवाद किया और जीवनभर श्रद्धापूर्वक सोमवार का व्रत करता रहा।

कथा से शिक्षा

भगवान शिव सच्ची श्रद्धा और भक्ति से शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
सोमवार का व्रत श्रद्धा, संयम और विश्वास के साथ करने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।
भगवान शिव की कृपा से संतान सुख, दीर्घायु, सुख-समृद्धि तथा जीवन के अनेक संकट दूर होते हैं।
निष्काम भाव से की गई भक्ति कभी व्यर्थ नहीं जाती।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"